

। अभका।

विभूग्रेप व्ये मुलम्यकी विवक्तीन सम्यक दिगारे लिस सम्तु ४५क कितन चमर्री उसम्बर्ध एउ वर प्रदेश मुझ है वह मारे में क्य में मूख रहे हैं। असमु य नुभनु म्हण उन् के लिस समय भद्र यवर ने ने कील वियाया उसके मनन साया भन्निय करेखा सप्यापन् कित्ने स्था हु यह कहने की ने करे सुवस्कर नहीं थां दमा भाव इनित्री मसमार एयंग किसावर भन्दे के रे कर का भावर भ द्या करने सं सत प्रकार की कमना में भिन्न दिल्डी है। भणे भाषेद्रनावमी कर अनु क्रिक्सणन्। प्रत्रभू उपस्के की वण्य के कर करना सम्यु पिक वर्ते १ वियेत लीवे क विथम का उनके वसमें का लग उसकी विथिय में के नस जिस विथय है कि स्मिक् भर्थ उन सम्बर भर्देक मुग गउँकी मुख्य मिहन करसन है।। उसमें सन भन्ने की विधि भन्ने की नीय निग्वी गां के ख्या लिनकी विधि ज्ञा न दी निषी है उन भन्ने के यह भे पर कर मिह कर निन यण देये। जिय यही में एकं कंदी हेवर निगय है वहां उसका नग्भी निगयन समित्य रिग्मक के पा भूछिंग करना है। लिन १ भन्मा भूके भड़ यद लिन कील प्रिया है उनका भू या क्रायका हमने उसपा गिर्म राज्य प्रकास काना उत्या समग्रा है कि उनकी नित्र भन्ने कर मनश्च करने संविभिन्द्र दिन स्पर है। उसीक्र भन्ने क्यनुमण्युम माविसुण्य सण्देगयादी इंसराण्यन् छि भन्यास् के गुपदी गणने

Gr.

क्दे भरं। भनुमानुक ग्रेग्व भए उन्हापक व यह असक एक मक्राई अनुमें ह भ उन उपनिके से की भन्मा में प्रति के गुजापना उउभ सका वह कामकान की थान करें हे हीकि- लंगडी श्रीसहमदा क्यार ल्ली मान के अलन मि भक्तगञ्च कालकानचारणीम ठी कार्यन की यह लली है। एक यह विषय उन्दिक सहसि ही निसु यदिगया दे कि - भनुसम्भूकी भद्याग्य के प्रकृण्य म्बर्म प्रकामित दिन प्रादिय उभी क्राल्य केम क्राप्यान करते हैं कि - क्रि मंभद्रमय द्रभाग अपगक्ति प्रकाक रिवरियल न करिं।। विम्यविद्यावाउन्विणनमिद्रुभी। प्रेमीय वद्युप्य। कणव्यम्भू स्ममव लिकमिष्ठा व्यवस्पार कृति प्रमुप उत्ति प्रमुप अस्मिष्ठ ।।।। प्रवडी ली विली किने इसन भून पर्णनाय इसमस्सारक भरतका । ठगवनी भड़केव सुपस भुक चड्डी भाषा भन् चन् छन् उन्हें के भग्म युक्तन कृतिया।।। भड़ स्वयुक् न्न। यहार दु देस प्रापिक से बुड कुरियो चुडि सवक्र से प्रापित द्वा विद्यापू चाशमीभद्रयवर्ष वलाक-इर्योथवर्ग रिजने सत्वभनुम्बर उन्हें। लिन्सिक्-समध्कामना सिन्द द्वार्डी है। उनके त्रमु उससे वलन करने हैं। उभाजकार्मित्रम्म्य करीश। उद्येषमीक्वल्यन्ः। गिन्मित्रग्वउव्यक्षित्र दिल्यमं ए दिन्यमं प्रमुक्ति मान में के सम्पर्ध के मान में कि स्वामि १ अवर स्पर्ध

क्षे) गाउवा भूथारी थाकक राजे वस्य निजानि।।।भीवमीका ल्या जिनमें कट विकट जिन्ह विली समक्रमेवमानवसुण्डा प्रवामङस्मन्के ग्राल्मे० ... एपे। दिन रविवारिके उससे मुिंगिन्ड करके हरान की राज्य है एन क्रांड समय उसकाना अज्ञेडा रुवे रिग्मे वसमें करना यादि डो मीध्य वमी ब्राड पेडादे।। महा।। जिया भ ल्लाय १ वरं कि ल्या १ सवसङ्गीनमः स्टू ।। इसके ० ... व्यालाय दिव रविवार वासीमवारके उत्तर में मिकिमिन्ड किया क्रम प्रथालिसे क्रिया एव गा बेंद्र प्रभमें अवस्था देगा।। चर्सा जिंममेठगवारी भग्ने स्वाप प्रमी सर्विभद्रभण्य भग्रह जुभगिक नत्र १ लिंड सवलेके प्रम् क्रिसेन्द्र॥००००। लापक वन्स्यदभन् सिङ्ग देउन्दे॥।। ज्ञाउपगरिण्डा अल्यस्य म्यास्य सामा सारि उन्त क्रेनरम्नप्राक्त दास्मग्रुवभागा उष्ट्रत्यम्यक्रित्वन एगा समा अस्ति न नप्रावस्त्रिए निपानमेव्याशिमिल रियन उत्तर्या भीतिलक्टा सम्हार्या न सर्विषयुमीकालगरपंडा । स्रीनिविध्रिक्तवाउनेवितिलकत्त्रभी मस्थ्रे न्यमृत्रिनर्देवप्यन्थम् स्वामा ग्रहं स्त्राह्येयम् सुउग्रह्म स्वाम् उत्त न्यम्य उद्भवलक्ष्यम् इस्मा ।।। भन्न स्विधा या म्मीन या द्विभीन द्वार र फिलम जलानक फिल भिला का गाना लेवानकी प्रथम सकावी । उपर मृशिक निक्ए हैं जिसके जुपा भन् सलाना है उसकी नए गके समाप ते जक

CC-0. Courtesy Sanjay Raina, Jammu. Digitized by eGangotri

G ar.

उसे प्रथितापर्वे मत ४ सकी रहिश्व उसप्य के जुपर थेने उत उस मीयों में गिरण्या हि र गुगल वित्वाची प्रकार उसी भक्त भवेजगी उस भन्न भन्न में मिलक प्रमित्रक स्थि में निरुक्त एस इल वस हियगा। यहभन् स्विक ज्ञाप स्थन भूक व मी भूकी बदन कर र्वेड है।। ॥ म्रास्त्राधिद्वल यनभः। उसक् ९००० रण्येहै॥ इसस्य प्रायुग सुक् भाममानी उमा सन्मिक्फिरियक्क मुल्याप्यया मवस्टिविता। मरमा विक्रसारा वा भागारिक अने वा सामानिक भागा मान्य विक्र चैयम् व स्ठविन रह्मा। भरह्या जिपमा महिष्टि निहुं परिम्स्यो। नणाविभिद्धवडी॥ सननभन् वस्तान प्रकिष्मित्रवार भ्रावभूका नियंडा। मखवारान्मिन्द्र यया नियं स्वर्धे विष्ठा महाया।।। जिनमेठग्र त्री भूर वसि पर्गाण्य से वरण रूथ हिन की हैं। हुए रंग रंग में की व लेसः भाइक्मराण सवसी समस्नारिंगोणभाष्म्रम्य १ स्वाइस भन्क ०५ व्या ५०क मुधन भावक जुपा एख है। कर रिणा के दावि उपादी वर देवा। वरहा। ।। जनमें ठगवं के प्रमुक्त भक्त वक्षानी सुद्धा उस भन्म 90 प्रथित के मिहिमन्त्रिक करके लिसे विष्ण्य येंद्र यस में दिगा।।।

म्या गर्ने के हीनमः।ऽसम के बीने समय० ... हरूर र पु र भागल लेक नम्से देश देश देश देश देश करने से हेंग्डर प्रमादित हैं। रपकरने स विलकी वसमें है एनी है। गुम्ह है। गुम्ह है। गुम्ह है। गुम्ह है। सी की की लिक सवाना भमय है जिन असवक्षाना भ भागवा १॥ मनन भने असे उत मडमिंहभन् विलक्ष सम् उरंभवर नव्यक्षित ग्राम्बर विक्रमन्।।। नहीं बुडर हैं छ उपले कर्निमिंग धव्यक्र क्रिंड भगस्त नी धिवी उत् कि किलिभिला कि इन्हिं कर वेर अपार की मलि लिए कि कर केर केर केर क्रंप्सींडग ॥ अग्रहक्नम्डा। गांत्रभाजेक्गाम् मध्या मिंव्यु न लिमें। क्रालमिद्रमाम् अर्विनाविक्य सम्मिविक्य से न्धीमेंगेग्वीक्रमी जिल्का नीर गेग्वीयद्भक्रविये॥ ॥ तंत्र महभभ तुः॥ ॥ ग्रम्डेविसिल्लाक्ष अङ्सा उवनका स्विज्य स्तिक्षा च्या वदा उरंग दे। एकी चुड युग मारी डीन लेक द्या मारी पण्डिप द्वा क वभाग साउभागह छ० वस नवग्रह सम्बद्ध एक महवारहरा ति उत्ह भेल क्रेंग्रह मैक अमूह विश्विकितापनि क्राति वर्गने अग्रह हुउ

8·

जिग्मि खुर् लाथि मुर्विनि मुस्ज्ञलीनण निमकिए यवन स्वकास भा उन्नभ्डलेक एउ दिन् यह ज्यारी यह पल विपल भहार साविण कि मन्दे कक्षिणानिक भीगाये यानव मुत्र प्रज्ञापी सूर्नितानिक उक्राय्येगीय उपारिमाणिया निम्मिन्न नि दिने गर्म दीनी नगंक्षेला अस्पेणी काल्यलय सन्न निष्ठ नन फंड्रप गुन्त्रभूषार्वारम् स्वारम् स्वारम् स्वारम् स्वारम् स्वारम् स्वारम् न पड़ अमिनग सेग मुनमी न दीनाडी नुपरी भिनिगी क्यलव क इंकी अनुपंच पलगाई र्यायुमिट हिए त्रिक कि कुल प्यालगा चायायिनीलया जलया जाएयाए तः प्रानिसारथंसार संगण्यकः नक्निन्द्र दक्रेड इन्ड उयपा यासन्त्री सत्निष्ट एक् असी देवेड अलुभः नयेगानुगकी उच्चिल जीधी नरकी न उम अवल्लाप येगाना की वडासाय नवनाय जिल्लामी सिद्धिक सरापमियसा प्रकी चित्र स्थीत भनिरीकिमाने वारा मुक्सकीर्जने द्रिनिक्स केंद्र एवं द्रिनिदिनिक ब्रुटिंद एड भिंड ज्ञानल देथ हिंद हिंद से प्राभन्न मुनर्य में ये पाना।।।। भवक्षारका । रिल्स केलेभाक्य सङ्घ करिकार वें नकर वली उत्रेग. अलंबालभीउया करिकिरिकेटि खेटि खट्टाउसभ उस प्रवन्त अनंवान नाम नामें

क्रियान्त्र में वाण अव देशीद्र॥ ॥ मुबर्विभित्रः॥ क्रिक नर्ने उत्युने उत्पत्रभा रवीं स्वरण मुडनिये गुम्र करें मुड़ के पूड़ के चरवर भेरा दी वीए कुम तान्यभी अवग्राहिन्य प्रत्यमा अभन के समा कि एवं एवं विषेत्र है क्रमह्म क्रमण्डी वरण विक्रिक्षकाष्ट्रकार क्रिक्र महिल्क ग्वलीं ने क्या के काम कार्य प्रभाव के कि के विस्त है विस्तार भागदी वीर वर्णन्यदी करिया जिल्लाकी विस्तिर्विभगित सिद्धान्य भकिल सदएरिला रिंग्लार वी प्रयुक्त भीर संविता की एर एनेवें भरे गर्मिय इंड स्पारंगितन हाय कुति जिल्ला स्वीय स्ववडारि मुडिनि वर्डे मुरेडिनि भेग्छन् भसम्बोजन समियानस्मी सब रेफिभाला दें माणी वडा दें हैं दूरी पल हारिवन रणरे विलिये दें मार्चिकार्धिया। ।। सहस्यक्ष्यवा ने जिल्वा हो जीनेक नव हर जीनेम हव हैं। भावगन्तर हो उत्तर सन्गरीकी सन वडा के कर है के उन

E sno

की थिक क्र मिकंकर डीनि जिर पित क्र में उत्हर में तीय हैं है। । सरसी। कि सहभगुमहायि उपहरिक्ति प्रावि अधिमार् दे असह रिंग कि द्वारा एक एक मेरी सीव दुई उदं मेरी श्रिए एक एक मार नाम मन्सी यव दें नगिमद्वीव अज मण्य मुगिक उठ दर्भ कर कदे कवन १ किलेव नव्य न भहली सर अप्रल कमित डेमवर सेनदित मिछ सगाछि सारिस प्रिया दिता है ति सुर क्रियि परणिय यानियारिय । निर्म स्वानिकिने नगिरंद्रवर किलेक्ट्रकवन शकिलेगा उक् एया: हम्सिक् एया हे ती कारया भेती क एया केरी क एया मड या व्योध भवक भाउ लगाउ मिव्म दाँ ये विएए के भाव लागे भावडी के बीर एक जक जनभन तराव ठीमसिन भने तरा लि व्ययभीमा। ॥ऋद्वा ॥ भग्नियवनी धावउपग्वानी एपंद वैडक प्रभागि एके उ गियांनी रानी उपकी वनाड लगीतिमें वंचिवाच विलंड राष्ट्रीवन क्रांत्रि देसरे व नंद्रापि हरीका देउ हैं भद्रयेव ग्रेंगप्पा वडीक रेद्रा द्राभन एडीकी नेना म भगिकी महक् वारे ज्वामा मके निंग पूर्व गुर्व मिने भगिका क्रिमाउंम विष्या। गमरम्। ॥मामलक कलक यह विकाल विकाल प्रकर महोगा भेरव मेलएएएए राय सियान सर छ।।। गमरहा। भद्रेयक जा कर न

न्विन्न भरमेक्ट जयह सनि सर्वे नेदन भद्र भए रक्ष मी ग्रापार छ यम् व्ययं अवं में सम्बन्धा ॥ अवस्रवीव वस्तुः॥ १ व्यव्यव वर्षे सम्या नला न कर नमुख् भाव रका कर मी गोगवाय मेरी ठानि रामकी म ति प्रमुख्या का का विस्तिया। भरे प्रस में लिक संख्वा भन्थ है हिरी ए दंग्ते वदं करे।। ।। यद्ग्रम करक्म दः॥ कलडीलकव्लडील गुर्गी तिनीर प्रभार भर ने वर भागा भीरत सुबे काली कम उभरी हारी मुख्ये दे कीलार भवनी वर्ते सा भवा के की वर सुवन लेंड न इंव भाउ रका करें म्भिर्गितपराउउररथिक वकरक भरी भाष्य नलगा। ।। गण्यलमुरक मनुः॥।। मीर ण्य नहीं लक्ष्य नहें भण्डनक्र ए ए रक्ष कर मीरीरापर छ।।।।। व्यवहान्यम् ।।। उद्यम्परम् भद्रम् सेवण्येनीनिया नव्वियो नप्रे भाष्ये व ज्यक म्रीगेरापम्छ॥ ॥सवणग्वहत्त्रभनुः॥ ॥एपिस लेक जिर जिर एक थाउं भासकरएनि दिया अना सेव्यक्त में वार्ति एरणा भुविणनि मने उ वि० की भी दिन सम्दर्शिद स्वर्मी सी दिवा भी दे एक्ट ०० देवि वड रेस रभद्रयेवकी मुद्र भरेषस् न सु जित्र मही निक्र के का कुए भीने सिद्धि ज इक्यव्ययम्गा।।। ज्यान्यस्य सम्भन्।।।भाराप्याप्र वाही ज्याने

बाली बारे कट भनवां हो प्रविवन्ता नवलाय मुस्नयां के भंग रवा कर मीन राप्रे । जिया मार्थ महामान्य महार दिन में दिन में मार्थ महार । मियानिक नभन्।। स्थान वर्दे विह्न करों प्रम्पाए यु किए वेस या करों इस ह भग छाउ समादि काप मण्यक मोहिकाप साण्ड दिनवन्तर भागीदि देश मणि ठवंड के ठवं रास सर्गडी क्वी दें वेस जा कहीं नगाय कथीं भीति हैं नि गुरुकी मनि क्राभाउ रम् रवाया। । मरम वीग वर्ष के भनुः॥ ।। विग्रमीन युउक् भव काउ एदा एद नायक भान भेग भड़ी वाक ठीम भरेंद्र विग्रिया द्रभीभा। गमरम्भिम्उभद्ः॥ ॥ गगप्यन विस्मक् भने स्वित्परि स थण्डिमेरावेग व्या गेराप्न व की मुद्रार एक इसे उवै॥ ॥ गर्प्यमी कर्मा। ।।रेण कें ने वाः ०९ में इंड मः ०:०:०:०: चडा उसमन्ति हेर ने म्हिमन्द्रित करके हिएनकाने सराख्यमी कुउ देशदेश ॥ सख्या रिम भन्थ क्निमलका हरान कर विद्वास वसम दे दे पा अनुभन् में मिलिमिने उ करित्र पृष्टिकी भानाक भिरापा छात्म करनेस मिखे वसम देडीदे ॥उपर न भन्म मिरिभन्डि क्रिंड्य इलक्ष वलका करने में क्रिंडियन देश है। । म्या। ॥ रेज्यमेठणेव् वम्यय सम्बर्ध्य वस्मान्यं सुप्ता रेव्यलीर 

भ्रमया ने सक्या ।।। भया के मन्या क्या के मन्या कुमला निर्मा उर्वलनप्रज्यस्वव्यव्यव्याशावन्यः सन्मम् इस्रीयस्र्रल् वया यस्प्री व उठे ज स्व में हे व विस्त्र मा। ।। वि बीच स इः॥ ॥ विनि ि सिर रायका कानी कानी भड़कानी ममक मवस्यानय सुरहा। ममु विवस्य स्वित्रविष्ठिन अन विलिष्टु लय इंड भण्डन भावित्र हिड्सी।।। निविध्वी में प्रयाभिड अवयम सम्बन्ध अला अला स्वामित विष्यु के निविध्वी में प्रयानित विषय के निविध्वी में प्रयानित के निविधी में प्रयानित म नेडा पम्यसवराउनेप्योगयम्बराइडः १९॥ मङ्गा उसमन् वि उपम्पर्य लिएक ज्या सम्युक् नमहीलिए । क्निक् प्रण व्या राम वाग्वर में क् जममें उन्हथ्के मुल्या जिला महीक समय जसपाईके मियोंने यक्ते व म्येन का का अनुक रण्य करें उस एका गरिन पद न कार्नेस लिसके उपर प्रधिग किया एयविद तसमें देगा। ।।भिष्ठिस हो।। ।। वाप विद्यानी सर्घेरामाव वर्षे एक्वेर जानी भाग सक्से विद्या वर्ष भी थरमेश्वरी कालकिक की वारा दुन्छ महत्वेष की उलाइय मद्यु विरक्ष प्रम ॥भावालवार्कभन्नः॥ ॥सम्बन्धम्यीपदीपन्त्रपत्रिप भेजाउ एए पुंच्या दिवसाप्य यार्वे वर व्याप्य याला दिन भेच वर व्याप्य या ही

G.

भरंत्रामियामा हिना वंत्रा हातिभ० मरा मिरा है शिक्य है एसकेन उक्षा नर्नेन गएड मार्ग मरी ठाने एडकीमाने द्वारें में में विकास । भारतम्य वर्गवक उलर्याणा । सद्यमद्दं उन्गानुसद्विय एक्ट्यान्य चित्रं ह्या । असि हाप्यां स्वाया स्याया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वा अनुनिसंस्युज्जलयया १९॥ र देणां वह उपलं इंद्र्य स्थनसम्य उर्यस्य ह य नजद्रशी। । सक्रम्सवर विक्रमहुः॥ ।। नक्ष के प्रयोगिक करी कि स्व उभिक्क नगड मह मुका असक् भागाजा विश्व पर इंदिस ए जेम्रा सुवित उद स दिवंड एयि उद्यादिन्तृ ये गिरी मतापेड पण्य असी जि प्यामा गरे अभाषा भाग कंगी वादा क्रिमिल्ड सेन्ड न्त्रभानक लि स्व प्राथनम् र जामद असएड हो। भन्र रहा। भन्नि द्विमन एक गानी रापनी रापन भारति।। यह हो। ॥ प्रमिक्र मंग्निम्न अधिक्के वर ५२ मञ्जूके विस्थ उभदाभीउपीउप्रेव अमणा ही। लएड कर फरवनु उन ही। लदन वंड लह क्रांडालि के पेसह लिह के ल्ला ॥क्वल अमयग्वक भन्नः॥अर्म सक् जिक्छा प्रविधी पण्यी उपकी रहा असक उपने समक दिए। उर्ह क्रांद्र अनेकापेडानिग्रायेष्वडीकि मुद्रा भद्रायेविश्वष्ट्र॥ ॥मस्त्र्या वक्तभन्।। गरान्ते उपक्ष अविनिवान वरेक्षेट न परे पाउरका करे मीरी गप्रे जी भन्न

प्राथि भवंगिम्प्रम् र ना। ॥मृश्चिस्र स्व भर्श। मृद्र्तवाद्वे विद्वनवर्षे वर्षे भीरापा ए अ किए वेसका वर्षे मस् इसण्य ए अ मिर् के कि वर्षे प्राप्त हैं । अनि क्रिक्त के कि वर्षे प्राप्त हैं । चवन मही पानी देउ एड। मणि हव के हव एम्भरी दावी देउ वेभरा मही नगण ~ सामि मेरी ठाने राजकी माने इंग्रेसन् वंस्रोवाय। ।। सन्त्री । मनिव करों वाप नवाडी जल्पदा वारी वारी वी यायु मारिका पुरियोग का वारी अउस मेगारय भवा कार्व उभग दमिं कार्व मीउल देउ एउ स्विग गलिगाय नकती वा त्रे विदिन गर्दे मालप्य एक निएक एक मनिवंडवी की मुद्र करें दिला यायवीर प्रमान उरीमान गुर्की माने क्रिंभन् रेम्रिया। ॥कापीयारक भन्।।।भदिस्य भदिनेव स्य स्थिमारी भणस्य सने स्थन देन देन देन है रिड्या मिसूक करादी परि 9 तर के दर्गिया। । महाना। । सन्ता है बनमे किनिवानी करणा उदाबांका उताउतां अवण्यांका वेसारा कार वन्मल मीउल उप्नेलप्व एयथा इङ्किष्ट्रभद्रम डीनिउ यल क्रिया येवी येथी क्रभा क्वी मुद्रां भनीय इंडिएड्रा। ११५ सहस्य अवस्य ।। मण्डि व्यवक्व एम्मरभडीया धिए मुझ्याचे रेक्ट नासिंद एगम् अप्यापित ॥ जन्मसे नमन्ः॥ ॥ उन बंचे उन्ने धंचे मृणि वेभेग्र बंचे पण्ड भर जनकथ

日かり

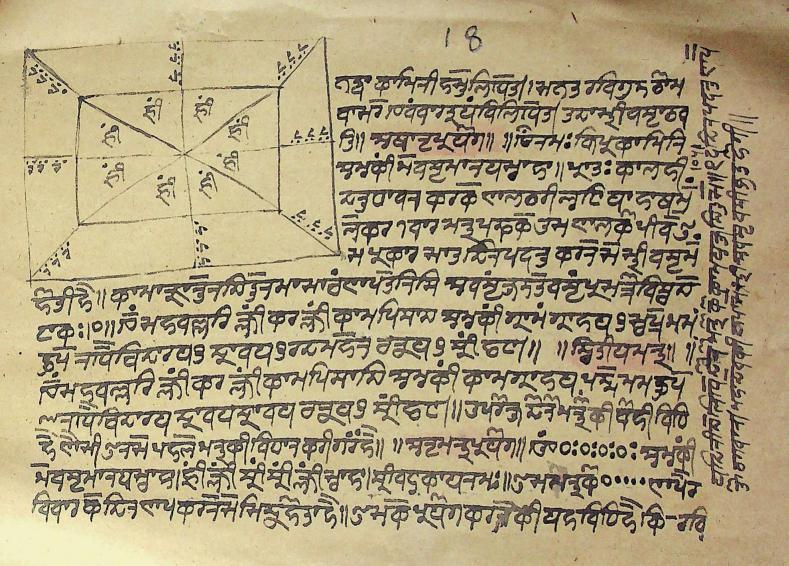
में मल क्या मण्म मलंड दममल माति स्था उथा। । छिनार एक भन्।। लेन भलेन चीर्गाने वार्ड एंन सबहु भाषिति एम कवन कवन के कवन कवन कि विस्ति सङ्ग कवन कवन कि विस्ति सङ्ग कला कला के हैं हैं सब वार्स है हैं उन्ने वार्स हैं हैं उन्ने नास है है उन्ने नास है हैं उन्ने नास है है उन्ने नास है उन्ने नास है है उन्ने नास है है उन्ने नास है उन्ने नास है है उन्ने नास है है उन्ने नास है उन्ने नास है उन्ने नास है है उन्ने नास है उ चर्वाकी मानुमरी ठाने दूर मेंदनी रंसरेवामा। ॥सरसा। भ मुग्नी कर यलि हैं मुहंगी यारिएए वड कवरा भीनिद्र वर्षे भम्बा उउर वार किंद्राला सन्वसिल वार मह्याल सारिवार वारी क च्छ विस्थ हवा हवा कि छिल हवाग रात उउरण्य येगिनी यन भाउन स वासकी यन राभयम्क पायक मामनी के यी व लागे व सुर भद्र य व निरा थावडी की मुद्रां एएना रहा लाडी थिन भन्न थाकि इक होना का का वल न रहे। गभन एन रणक प्रणकाका। गलेंद्र के किएला पएक किया। निर्दिया निर्वेषाया उने निर्दे भूदनिर्दे एक्ट्रवा ।एक प्रमन्त्रा सन् सीविशिवादी डीगवादी सनिड क्वाड पण्डल वासकी नणवादी मे रायक्थाव्यान्य की ठिन्ने नामित्र वारिका पत्र भकिनी मिकनी भाउ संबद्ध सक्रावाक्षमन्क थक्र बेदि जुपरवर मन द्वी रोजगण्य स न रंग्ड रंग्ड ग्राय्की मुद्र नेन्य्यभागीकी मुद्र में में किर देवड वाकी मुंदर दुनमाना की मुंदर कामी केंग्रवाल है है की मुंदर मुपन गुनिह कल्मीभाम यवडावल सिंड स्मिड कामी कारिकारिक मीकर पापंड

दि य्याक कर यक्षक कर एसन भड़ जिंहरणेया। ॥भन्भी मणक एन स् रलक्।।।।एक न परंदा कर के नेन पानी सरणि है एन रिक् न बहु उन्हि एउ उरंडा छिण्यव पश्चिम उडर यहिल छारिक सन पडल उद्गान व पर सेरण नावण्य विश्वेन गरंड सेवनण भागलनाक रवन विगर्न कर्ने इलललवंग नियागी ए अद उल अवटन खवटन उर अवन दम धित्र लंदगं सनी एनित्रं चिलिया प्रामित रणीन भेट इरं छक्न रणीन महुर गोर कर्याना पदिले रण दिय नवा क्रांपा विलक लिला सिपि नक क्रांन क्रथा भड़ मेरी क्रां न्युक्थ क्रां ए गद प्रथ गर महरी नाप प्रकृपकी मुक्तान गढी भए नीय रंगने यरा कि कटी भी कित राव रूप पमुरी अर्थ पायुव जुपा महारो राम र ने भंग महान ग्राणिए एं नहीं कं मन्ती के जी करेंए पिउदी भिजित्य प्राण्य मति विउ ता नेक भने एए पर नगिमंद्रिक छन कवड़न नाए हिस पिया गद्र कार लेंद्र भेन साम थाए भएवसन हैंग दिंग का क्यासन निवित्र टेन खायक नवनाय क्रिंगभी सिंह के समाथ मुंड नि चिंकानि खरडाते बुड़ व्यापिक विलाखकारी खरडाते बुड़ 

उन्यापक्करणर के द्वानरही। ।। महाना। ।। सम्मूर्य जन जनयनम र्भारत्रे प्राचित्र मेरिस्सी। इस अतुके पढ़ १क अस रणा में हुए नहिं।।।अइ ग्रहार राजका।करी मुकरी भारति मुंदे स विश्वां शिवा वाभवन उत्तक व्यास के भरे वीने एउ भने प्रकिन द्रव सं ख्रम भीराउ क्रक रेगी सरेग कुंदाडा। ॥ द्विडी वित्र हग हगरायनी मुक्का भमव हु जुर 9 सुद्रा । उस वलकिमिनिड्डकाकि रिल्समीकि।यान्यन में है यह मुपर वसमें देगी॥ बिडीयमन्।। गाउंग्रही भद्यभा उद्गी वर्ग मानि मन की प्राप्य यद्यद्रभ खभव चान्द्रा गविवा कृतिन लिसक् नाभलका उग्र पका मका में देभक ने वित्वसम्दगा। उपने पन् क प्रमुक् भन्न भन्य जनसभिक्षित्रोहि॥ ॥ महाभरा। ॥ जनमाना गामना स्वत्रा सम्भावन लक्न निष्यः क्रामानापर्य सप्तम् ठवारे ॥ महस्येग अण्दा उसमेन्से ० उवा ४० पक्ष मितिमान्ड काक भी के संगाम स्वस गी॥ । भिजीयमन्। । गर्णनमेनंभे । धिमानी क्रिपिनकलायक सिनक मिन की भवन भागा है । जिन के लिया है । जिन के किया निष्का लिया क्नानान प्रथयद्वसम्म प्रणापर उसम्बद्धा मधवा १० विन सिम्क

उन मिरिया ॥ मरता ॥ रेण्डीमः॥ इतिमद्भारन् मार्मपूरं मारिया भाष्ट्र प नम्बिभन्भन्भन्भन्य इस् वाल्यवक्रमा। ॥ यर्भन्य यंगा॥ ॥ त्र ठग्रुग्रिंग नि व्यायिकगमाल चिनिकगनि भविन भविकगमारी वग्राम निड्ने वग्र सहप् सवहगानि मयहमान्य यग्र रेड सरेड हगा कि ने की नस्य के स्पर्य ह वय मनेपे हगविए कर ज्या सवसव रगमित लिले हैं है व भवह इ किन सवाकि ठगानि उत्पादणा हिंग सुकि वससे करना देहे. जम क्रावड एव। उप उन्न भन्न एप के मीध्यवसमें दिगी।। ।। जसरम ना।।रिण्नमे उद्विष्ठ राज्यनिनि थय। हाइ १ में इ १ भन सम्बेश पर जिन भेष्ड्रा व्यानकाने मननुर एक द्वार में निका देश मनका उसे अनुसंपद्धि उस हा के उस हा के वाप के हैं। इसी प्रकार 90 सिन्धद ने कर में दिन देंसे क्रिनक लंडिक लंडि प्रमान में के प्रमान के लिए के महाया उसक पारमें हैं कर उम्पेद प्रभमें देंगी।। भग्ने नीमालाव छाउक मध्राइस हिल्प्य के जपुर निषक्र पर कर भी डिए कर जिए समने नी हैं रोपकर हिरभनुराधारंगकामिनग्रानिस्पान्धित्राधार्था

6.500



नगक्तिन्छक् अह सवाधावभदीनधीसका ० रिटी वनक वल उसमज्ञ १ मुराधान कारकती उग्ह सक् समी उग्ह नसका एक दी उग्ह से रामी सक कि- रेरेने उग्ह सिक्ख्ये। दिन लिए सिक् निक्र निक्र मिन्द्र के पानी मिथ्निक र उल्नी महलीस भन् लिएन राष्ट्रिय। दिर उसकी पार्ह्ने प्राप्य परकर। भिक्षान राषी गाज्य सीनी उभू रिंटी के गुभा गायन । घदभ उस पुका गायनी लिस मसंव रेटी स्क्रेस्वे। इस प्रका करके सिस वसमें करने हैं उसका नामल 9क र उसमन्क ० उवारण्यकरें उसक क्रा मक वर्ष सम्बद्ध के उसरेटी के प्रकार करिय क्कल जंड जापवादी असप्कार करने स्वत् वसम दिना प्रत्न की साम नी यहरे-। गह उध्मापारी भाग सीयक भीरे यहक नाव ाजण्य सिक्षिति। ह समन्क भग्ना काउसमय्द्र क्रय्स रदन राष्ट्रिया। ॥ स्रीविक्रविमन्। थानीक कीए पिक्क भार भाउत्र हली भेरा एड। सद्विसंक वृष्ण स्वन्स इसिन्ने फर्ने भग्धिया निर्देशीय मार्थिन कित्र कि खं वन विष्यं यनगीर फं १ किन्वन निष्य कर्ष वनी निष्य बने लाउ यारिउ एउ हम्पूर एककी मित्र भेरी हात्र कुरे भन् नं सुर बाया। सापि पर देखें । विक्रिक्षिक प्रमें कान देव के काली जिंद्या के रिटी प्यवनी मादिया। । विक्रिक्न ने प्रमें कान देव के काली जिंद्या के रिटी प्यवनी मादिया। । विक्रिक्न ने प्रमें कान देव के काली जिंद्या के रिटी प्यवनी मादिया। । विक्रिक्न ने प्याप के समें जी मुखा जिंद्या इंग्यंनी मादिया

好好

॥भन्भकि १क इक इंटरिनि भवियली करें एड स्वित्सम् भर रिति कर मेविस्वि जम की कली विस्वित उपा मेविस्वित अपा मेविस्वित उपा मेविस्वित अपा मेविस्वित जुड़ा उन है गल मुरेंग्याल काक्या भानी हाउ गरें उह क्रेंग्वे थायावाला जी मिया मेल उर नरेक में मेंजावी रंभा भद्रत्व के दिन रं छदी भरी उर्ग एडा। ॥ रस्य के महा। थनी । द्राभक्कि विच कर्ड करनी का में उंड कुटि। छं मग्नुः । प्रमानः । प्रिः भयाभवाद्वलभीष्ठभाभें उठे प्रक्षां विष्यु प्रयोधना प्रतिवासी हा उल्पिकित उपम व्यापियमदान सम्मः मिषिउपन्समगरः प्रभीया। मगरुजे क्रेल्य्मनिमवन्यनले चक्रभिया हो मुस्य हु विक्रिया भी भरंड द्वारणाक भनु॥ ॥भक्कि इक ययपे वर १ रुष कुट उं उ॥ मध्रि रही मध्रियार हो भ ायल विकाल गरी भेलेंडा लेंडा गरी यहाँ विषय वद्यापन रंग भिगय। विभव्यय के अन्। नण्य जापर कि विक्व उल्नी मुंग्रि मरण्या। गम्भुकाम र प्रयाक्षेत्र्॥॥भालाकाणमाक्षेत्र १०। उत इकि मिरेनुष करि॥निस निर्दे नुद्रवद्यां भेपा गरलादि निस्नादि कदल्या जड़नियंग इनि इभाउनयर नि अनिह कुदलविन पद मायमद्रा। ॥भनु जक रणरका।॥रंग्समम्पवउपर निन्यमारी सेनेकी रापी सेनेकी सुरंगी जिक एक वाद विलागी एरली नाली कारि जिए सम्मूपारी बदावें नेना यमारीकी मुदां क्रीमन् रमुरिवारा। वंग उ कीस पढ़ मरीर फ़क्न रहे।। ।। क्ल अल सन्।। पिक के गाप्स रण

0.5 E.

मी कल्डल नरदे। यन पर मिवननी जे में ए दन्मानी कहर विल्पिति एनेली क्लान्स् स्ट म्ले लेक क्रिनि विठीय मले। विग्रम विग्रम विग्रम स्ट माने भनु जनली रणाक्।। ॥ कंप विलागी तथा जनला थाग्नुवान भीदि मेरे हैल। कंप वि लगी वथ पनेला मुक् पलि एम भामपन गर्म भने की मुक्तं रेजिन्या र दे गुड्की हिंदरं॥ गमिमाथी गणंकिमन्॥ गमिक १ कड़क । गरू मुर्लियन भागार प्यायपार वट त्या भाष एउड अभरधी धर्मनियं अन्दर्शि मिदिधीय रथा ग्रही निरी निभिन्नि यह गलिनी उहै नीकी भगवी विलागक रखा वर्ण का ० रणि भूभरवी देए कुन्।।। यन विद्विक्भन्।।। यकि भक्ति मले इक्नियन यदि कुट जिन्मेष्ठकम् छमके लामक लाइ कमान्य क्रमु क्रमु कर क्र गणिति क्रवा भवन भव द्रामं वण द्रा द्रा राष्ट्र क्र मिगवन मू वड मुंड प्रादेश म्वड मुड मुड विहराप्रादे म्वड वण्लेगेहि मूवड भी धीलिद स्वड मण्डान्य एसीर करएसीर दाकाका बिसन्भित मन्त्रव दे मारे वस्पर मल उदि हैं भी के पानीपादिक भि से वे उराह मूयत भद नामा अनिका भन्यक्षि प्रवेष मा विष्टु कुछ नीका दे ।। एक किला पढि क संग्यक विपरीउपरण्ये डे संग्यनिक लिएड। तीनिक पाकिक तीनिक न्। निक्च दे के प्याप्त प्रमान्य रापराना दी। किन अनि राजिक तैवादि द

विभागमन् भन्यक्ष्यण जीनि उपणा गामा कि मन्। ।। पल पल मागाउभिति क् भित्र मीग्भ इके भगीव मुमंप छ००:०: सुद्ध । जदीभ न लिपके करे वे एक भगी मुद्रा। ॥ प्रतिक उपर एक एक एक । इसकि भन्। ॥ उलए छ नर भिद्र पेलए विकाय का का कि नविमद्र गया। ॥ इक का निक् भन्।॥ वनिव संभादि एचे अग्रदनवं ने निम्पर्य प्रम्य एनिये हम्भाउ एउकीमी अनुपहि च्या सीकटी एकपाडी निया सडलेंड रण्यन इक्ष्या भीनीक किए। ॥ महस्रा र भन्मिति चिगीठ्या एनि उति न दम् सिक्यान भके नुद्रा न स्वाक विद्वार की मुद्र हीउगदि भरे १ सण्डवर पि पानीक कीए भारवन दे हवा प्राधि अडव पानी भने पद्भाग १०। नद्भा नगदे॥ ॥ पेउनद्रिति व क्रकारण पटमेर मणक्षेत्र ॥ मणक भूग्यें उन्हीं उन्तीमगीर गरीगे एडिद्यां भूरोपाल के स्निएयता है। ॥भनुमार क्।।।नीकांद्रयभनीभीतिभाष्ठियातं गुर्मेहनभः यंव्यय अमीर्यमा मननाव यन जनमा विमाद डिगल वेरी अन सुद्धार वास कि सनद्य वेग्यला ॥ भर स्।। । प्रस्तिग्रमा प्रतिन्य भवन्य दिनय क्रमेर क्रमेर्याम भिन्ना ल नवग्रद्रमाल देशमाल किनाउमाल देशियाल उ मुदियाल यालागाल प्राच विनम्मद्रकाल अिविधि उन्द्रायाल दम् दनमं उभगे लिन्पीरी वचकल उद्गारी एनथरिदियव महे उरमउन्गित्यं विमल्य मदरे विम सद

यन्नक्भनी थि अंडिशा ॥ मुद्रम्॥ ॥ विस्कृभाभी विस्कृभाने। विस कृति व हारि उत्नि एकमं एउं सम्मुक्रिय म्मुक् महिक्स क्रिक्ट है है एक है निर्मे एक क्रिक्ट करि सिहि एउकी भावमाला। ॥भनुतिभक्त पानी परिविधाउँ॥॥एं क्रक्राके नासूकेन मन मुगनि उ संभक् क न्छन् ने व रजा भीडा हुउ एवड रणविष्ठ न्छमं उ व व अर्क मं सुक्तर भूभिष्ठ प्रहल्नमः मम्यन्मः मगम्यन्मः गल्मायन्मः॥ ॥ जाजावक्ट नेत्रवर क्रभर्॥। अधारमक्रमक्रमक्री नंक्रम हिरा करिया निक्स नीक्षित ॥ क्रमी ज नी विविलागी छान जार कलार कलाना काए जाजावाय प्रथा। ॥ महाना।। रंग्जलज्यान भनीमिन्क्यप्रिम्य भागा ॥भन्नमीगीभकारक्॥॥ भीगी भेगी मेवउमी भेरभार मनायमी एवा लक्षना उपापर निरा थे। नदादि भदार य पिक् क्रकिद विधनिविध देउ एदि॥ ॥ भड्डकए न गुर्मिक भिन्दिर उप लगारान कव्यासक भन्निम ग्रमीलगासिन लिथणन्यम सक्न णम्बम् अत्र उत्रि एगाप् ने उत्र चिमिन मीपावशिएण एण उपरवेम दें उ ॥ गभन्ती क्रीम्परिका ॥ सरदी करी गाउँ गाउकी सभारी प्रकी डेकर गेवर वि की विचे दी की उर कड एडिगेग्यत मुण्यत एडिंग करी कभी मुरी क क्री करी करत पदारी कळ जाइ जाइ करि उउन विकी दूर दूर पर पर व पर करने मार मीलक्टर गरमेर भद्रयेवके मुद्रार गिरा भवडी के मुद्रार मनी उ एदरी महर

CC-0. Courtesy Sanjay Raina, Jammu. Digitized by eGangotri

08

वनकड उन्मद्रियोकी इनमन महम्मद्रां इनमन्की॥ ॥मान्य मार्थ अपर्य विद्यार विद्यार कर्मिकः कर्मिकः कर्मिकः वर्मिके विद्यार किल्वित मुण्या नव पेर नी की कर मुण्य नी मान मन्द्र कनवार रेम न भदारविक मुन्रे एपं गुक्क भाव भाक उद्दिर गुक्क जम कर्णी उद्दिर्श ध्यमी निमायुक् महारे भहारेय गुरु के व्यक्ति व्यवीकी थावडी ॥ भाष्ट्रमा ॥ वीकी उनके एडिकः क्रिकः थीयुरीकः भगवारी विरा पंथाना प्रभाषा देशी विधवेड मनगढिण्ड जुपवल भिग्रेण भार मिव प्रमन मिवनगरि प्रत्रभणना क सन भद्रयक् छन गिराप्यवीक छन नेन यमाति के छन उउति छउ उउति छ उ॥ ॥मरहा॥ ॥मग्र ५० में विगन विग्रम वीकी भागक्त वर्गने॥ ॥भर न्ता। ए सरस्म नड खब उदि भानी भरेरेरे भिष्ठ रेव कार्य था परिमान क राम्यभिने भिराक्षि मनवंगानि भीनी भावे वार्ति जुनि किशा ॥वीक किरियर्गक्नक्भर्॥ । द्वरी पिए भूगन् ग्न सक् वीक मिरके उनर ए रीक्न क्ट्रि उसे मुन्मे उसम इके इक उनिवंध क क्ट्या। १ उर्गे सम्पाननक कुण किया हिल्ली किया हिल्ली मार्ट कर्निमम्बापक मुख स्ट्रिक्षिगार स्ट्रमण मडायुष्ट एड गरा भरे भरे भरे भरे भरे भरे जुर जिनिवं मिन्द्रा। ॥ मरहा। ॥ विमयन लिहिवं नमें उदि द्विति

अण्डिक्य महत्व स्वितिभा भरी चित्र निषंड भर् अमलवाना गण्ड भवाका विधानित्यन स्थान उनी कार्यन्यः मियविस्त अनि उन्ह उन्ह जुपा रंमर वादन ह्या ंग्विदंव निन परिदाय थेर नक परिदेक जाव वर्गक हु हुए हु उठ विद्रमा उस्मान सम्मान भाग थेडी कवीर वव ग्रें स्था पर वह स्था कि एका व निरंबितिनी भगवती एए भग्ना मंत्रक्रित केका। ॥ मरहा।। । मैंद भेरेमा स्त्री कलं नेक भी उम्मार भागार भागा धेरलार्ग्य एकक कल्मा क्रिम्सन व द्र अपक्षक्ट के भनभद्र सहकी क्ष्मिक्त री अनक कर विद्या में । के सह का मनका करविमना था किकी विमनादि अभक् कार क अनकह कार के पक्तिंकपिकिर्देश। ॥मद्भारम्भाग्यम्भागः॥।।इभानण्यीन्। सन्तरमाभागतिन।। विकासिन के रिए कर एप्पाण करके मुभलकरें। इल लेवन भरत राम नीकरित कस्री सरगल प्रमण सवर उन सवके वरंतर लेक सक करने उनकी पु प्रमानीक उलम् द्रन म्ह रहन उक्ममन करन उसके राय स्वभए वन मिहीक

03 84.

विश्वाः स्किभ्रव्यववर्गम् अर्पावन्यगः॥ प्रवर्भः॥ क्षियायनभः। काम वर्षा क्रयन्यप्राप्त असुपान्न ॥ अस्य अभागारम्य प्राप्त अनुवा य सवराना प्याय सवसम्पद्धाय हाल इल प्रज्ञाल प्रज्ञाल सवरान सक्या सम्पद्धान जिस्साउसम्बर्धः स्पर्कामस्कानम् मान्यकानम् । विस्तित्वानम् । विस्तित्वानम् । उनुमारक्रमम्मद्रमक्र।यद्किनिभि नुभारक्रिएनक्रायु उपा निम्प्रभन्म ०१३। यन्त्रक्षावाष्याव काक उस जभगक विलक लगाया वा वा किस कर नांद्र उसका प्रान् करक वदक समक्ष्य का जोश्रवस्था।॥भागाप्यम विक्रिमीभभम्हना जनयाजनय भागयभगय देवटा सुद्धा उसभन् कर् यग करनकी यदिविषद किर्ग्डिक समयमार्क प्रमकाक कांस्कामा ल्यान्य विकार ७६३ व्यान्यक करन्स अपस्यार्थ भद्रजगा। उसयत्क हलपरक जपा नग य ज्य दर्र लस लिएक लिसक भग लकानाड उसका नाभानापाउपर रिकान मित्रु कृत्य उपम्रक् नम्मद्रगा।

मक्भानाम् भाषाव उसम्भागनी व्यक्र महक् प्रमक्क जुपर निर्णि भन्न कार्ले को भलार्गियाभेउ क् ० उद्यनिकी राधना एक दुराउ उस पडल के भगना उसे प्रकार ० .. भानारायकै०.. दुर्वभागना प्राण व्यय दिन दुस उग्ह भावति वक् करने सम्ब्रिष्ट उलगेगा सगार उसमन्के उसी धकर ए दिन उक करें डिम स्क क्यांन हम दिखागा। ॥ ॥ महक अवमक निका भना ।। एग एगर भनान भने सबी करि । इल निक विट इ लानक भार एनएय के उरीम विदिनकी डीन उल्लाक। उसमन्कि सिंह येंग में 0'3 व्यालयक भिक्त कराने कवरमें मकर का एक ए ने गाउँ रा उसमें बुके ९० हिनडक क तरक्थानायम दिक्ताय उसप्रकर गरीकिएं पक्र जेमर्था निक्ता राष्ट्र कर न देखें उसक ने क्वर में सिन्क लेंगा। । या मन में व कार्निक लें एकए छारनी अल्य लय वहाना क्रेंद्र बसे डेंकए क्र नेसे मुद्र हैं भाभा प्रकृषी।। पदल पेउनी भिंही से स्टिक लग्ये उसके जुपा संया स्टार विश्व के जुप वैक्क एपी। एपउवजा पश्चिमकिमकिभावकान्य अपिक्षाणक्षण्य कार्य भारतिया । एकपाउका की पक्ष वालक संस्ताव ठालना भक्येंसक इला अन्य एक पेसकी भी मु उर भवा गे र की मिलुमा घंड भवभया गहाँ मिलाक एम पान । । पक्नीवा यह सबसी थक मा भी गपक लियानकी अपर्यना असक तरा सम्युन्वयम् अक्ट्रियायायमे किक्रिना असी भूकार क्रिनउक करना थंग्डानीय ज्ञार श्रीयकके चार इन्हें। द्वा००० वार नीयुके मुिला उक्रक नीवके कर उसप्कार किन करनेस महक उर्द्या भीन देंगी ज़ार हैंगी करनम भरइदिगी। ॥वसीकरण्यस्येग॥॥ महिन्नस्त्रीक्रिस्यपन्तर्यभारत्य